वैशाखमास-माहात्म्य

महन्त हरिशंकरदास 'वेदान्ती'
मन्दिर श्री रघुनाथजी, सियारामदासजी की बगीची, जयपुर

न माधवसमो मासो न कृतेन युगं समम् । न च वेदसमं शास्त्रं न तीर्थं गङ्गया समम् ॥

वैशाख के समान कोई मास नहीं है, सत्ययुग के समान कोई युग नहीं है, वेद के समान कोई शास्त्र नहीं है और गङ्गाजी के समान कोई तीर्थ नहीं है। वैशाखमास अपने कतिपय वैशिष्ट्य के कारण उत्तम मास है।

[नारदजी ने अम्बरीष से कहा-] वैशाखमास को ब्रह्माजी ने सब मासों में उत्तम सिद्ध किया है। वह माता की भाँति सब जीवों को सदा अभीष्ट वस्तु प्रदान करने वाला है। धर्म, यज्ञ, क्रिया और तपस्या का सार है। सम्पूर्ण देवताओं द्वारा पूजित है। जैसे विद्याओं में वेद-विद्या, मन्त्रों में प्रणव, वृक्षों में कल्पवृक्ष, धेनुओं में कामधेनु, देवताओं में विष्णु, वर्णों में ब्राह्मण, प्रिय वस्तुओं में प्राण, नदियों में गङ्गाजी, तेजों में सूर्य, अस्त्र-शस्त्रों में चक्र, धातुओं में सुवर्ण, वैष्णवों में शिव तथा रत्नों में कौस्तुभ मणि उत्तम है, उसी प्रकार धर्म के साधनभूत महीनों में वैशाख मास सबसे उत्तम है। भगवान् विष्णु को प्रसन्न करने वाला इसके समान दूसरा कोई मास नहीं है। जो वैशाखमास में सूर्योदय से पहले स्नान करता है, उससे भगवान् विष्णु निरन्तर प्रीति करते हैं। पाप तभी तक गर्जते हैं, जब तक जीव वैशाखमास में प्रातःकाल जल में स्नान नहीं करता। राजन् । वैशाख के महीने में सब तीर्थ, देवता आदि (तीर्थके अतिरिक्त) बाहरके जलमें भी सदैव स्थित रहते हैं। भगवान् विष्णु की आज्ञा से मनुष्यों का कल्याण करने के लिये वे सूर्योदय से लेकर छः दण्ड के भीतर वहाँ उपस्थित रहते हैं।

वैशाख सर्वश्रेष्ठ मास है और शेषशायी भगवान् विष्णु को सदा प्रिय है। सब दानों से जो पुण्य होता है और सब तीर्थों में जो फल होता है, उसी को मनुष्य वैशाखमास में केवल जलदान करके प्राप्त कर लेता है। जो जलदान में असमर्थ है, ऐसे ऐश्वर्य की अभिलाषा रखने वाले पुरुष को उचित है कि वह दूसरे को प्रबोध करे, दूसरे को जलदान का महत्त्व समझाये। यह सब दानों से बढ़कर हितकारी है। जो मनुष्य वैशाखमास में मार्गपर यात्रियों के लिये प्याऊ लगाता है, वह विष्णुलोक में प्रतिष्ठित होता है। नृपश्रेष्ठ ! प्रपादान (पौसला या प्याऊ) देवताओं, पितरों तथा ऋषियों को अत्यन्त प्रीति देनेवाला है। जिसने प्याऊ लगाकर रास्ते के थके-माँदे मनुष्यों को संतुष्ट किया है, उसने ब्रह्मा, विष्णु और शिव आदि देवताओं को संतुष्ट कर लिया है। राजन् । वैशाखमास में जल की इच्छा रखनेवाले को जल, छाया चाहनेवाले को छाता और पंखे की इच्छा

रखनेवाले को पंखा देना चाहिये। राजेन्द्र ! जो प्यास से पीड़ित महात्मा पुरुष के लिये शीतल जल प्रदान करता है, वह उतने ही मात्र से दस हजार राजसूय यज्ञों का फल पाता है। धूप और परिश्रम से पीड़ित ब्राह्मण के लिये जो पंखा डुलाकर हवा करता है, वह उतने ही मात्र से निष्पाप होकर भगवान्का पार्षद हो जाता है। जो मार्ग से थके हुए श्रेष्ठ द्विज को वस्त्र से भी हवा करता है, वह उतने से ही मुक्त हो भगवान् विष्णु का सायुज्य प्राप्त कर लेता है। जो शुद्ध चित्त से ताड़का पंखा देता है, वह सब पापों का नाश करके ब्रह्मलोक को जाता है। जो विष्णुप्रिय वैशाखमास में पादुका दान करता है, वह यमदूतों का तिरस्कार करके विष्णुलोक में जाता है। जो मार्ग में अनाथों के ठहरने के लिये विश्रामशाला बनवाता है, उसके पुण्य-फल का वर्णन नहीं किया जा सकता। मध्याह्न में आये हुए ब्राह्मण अतिथि को यदि कोई भोजन दे तो उसके फल का अन्त नहीं है।

वैशाख में तेल लगाना, दिन में सोना, कांस्यपात्र में भोजन करना, खाटपर सोना, घर में नहाना, निषिद्ध पदार्थ खाना, दुबारा भोजन करना तथा रात में खाना-ये आठ बातें त्याग देनी चाहिये-

तैलाभ्यङ्गं दिवास्वापं तथा वै कांस्यभोजनम्।
खट्वानिद्रां गृहे स्नानं निषिद्धस्य च भक्षणम्॥
वैशाखे वर्जयेदष्टौ द्विभुक्तं नक्तभोजनम्॥

जो वैशाख में व्रत का पालन करने वाला पुरुष पद्म- पत्तेपर भोजन करता है, वह सब पापों से मुक्त हो विष्णुलोक में जाता है। जो विष्णुभक्त पुरुष वैशाखमास में नदी-स्नान करता है, वह तीन जन्मों के पापों से निश्चय ही मुक्त हो जाता है। जो सूर्योदय के समय किसी समुद्रगामिनी नदी में वैशाख-स्नान करता है, वह सात जन्मों के पापों से तत्काल छूट जाता है। सूर्यदेव के मेषराशि में आने पर भगवान् विष्णु के उद्देश्य से वैशाख मास-स्नान का व्रत लेना चाहिये। स्नान के अनन्तर भगवान् विष्णु की पूजा करनी चाहिये। स्कन्दपुराण में आया है कि महीरथ नामक एक राजा था, जो कामनाओं में आसक्त तथा अजितेन्द्रिय था, वह केवल वैशाख-स्नान के सुयोग से वैकुण्ठधाम को प्राप्त हुआ। वैशाखमास के देवता भगवान् मधुसूदन हैं। उनसे इस प्रकार की प्रार्थना करनी चाहिये-

मधुसूदन. देवेश वैशाखे मेषगे रवी। प्रातःस्नानं करिष्यामि निर्विघ्नं कुरु माधव॥

'हे मधुसूदन। हे देवेश्वर माधव ! मैं मेषराशि में सूर्य के स्थित होने पर वैशाखमास में प्रातःस्नान करूँगा, आप इसे निर्विघ्न पूर्ण कीजिये।'

तत्पश्चात् निम्न मन्त्र से अर्घ्य प्रदान करे-

वैशाखे मेषगे भानौ प्रातःस्नानपरायणः। अर्घ्यं तेऽहं प्रदास्यामि गृहाण मधुसूदन॥